तृतीय अध्याय

सामाजिक व्यवस्था
(अ) जैन धर्म का विकास
(ब) जनपद भिड़ंड में जैन जनसंसूचना
(स) सामाजिक घटनाक्रम
(ट) समीक्षा
पद्याय - 3

रत्नाकिं आर्यस्व

करुण जन धर्म का विकाल
करुण जनमें विषय में जन वस्त्रवर
करुण लाभार्थ अनी दम
करुण तनीशा
नामागत अनुच्छेद तथा लघुसंग्रह गतिविधियों के पुराण में
केन गो का विकास

सामाजिक अनुच्छेद तथा लघुसंग्रह गतिविधियों के पुराण में
केन गो की स्थापना निकट अन्दर के पुराण में नहीं ध्यानरिक परामर्श की विवेचना
कार्यरत है। इसलिए सामाजिक अनुच्छेद नहीं के माननीय परिचित
द्वारा माना जा हो। उत्तर: केन गो के के विकास की नामांकन कार्यों का
प्रमाणन करने से विरलियन प्रारंभ होता है कि जनवर विभिन्न में हस्त गो की स्थापना
अभाव 2000 की पूर्व हुई थी। और केन गो के निर्माणी प्राचीन 3100 में होना जा
तीर्थ है। जनवर विभिन्न में हस्त गो की पूर्वी आवरणाओं में स्थापना की उलझी
पूर्वोत्तम सामाजिक शरीर परिवेश में किया जा रहा है। दिग्विजय और दृष्टि-राक्ष
रौनी की सम्पदाओं के उपलब्ध साहित्य के आधार पर यह पता चलता है कि
विशुद्ध की हुसली गतिविधि में विशेष कालीन विषयों से थी भागों में मिलित
हो जा और विश्व ने अनुकूल कारण स्थापना का अनुकूल परिवर्तन आ चुका है। जनवर की
नवनिर्माण का पक्षावली आ चुकी दिग्विजय क्षेत्र और जनवर विभिन्न तथा
समर्पित करता था। अब दृष्टि-राक्ष कार्यों के प्रथम भाग में उनके भेद की उम्मीद
भी कुछ नहीं और जीवन- धीरे धीरे तीन सम्पदाओं में भी अवनति दर्ज की गई
किन्तु भेद के कारणों पर प्रश्निक प्रश्ने से वह पता चलता है कि केन गो के
विविध रूपों में तारिक व्यवस्था ने भेद नहीं के कारण बड़ी बड़ी बुद्धि है वह
अभाव 3100 में विविधता व्यवस्था है की हो सकती जन सम्पदाय और नवीं जगता और
अनुविधान के अनुसार वी अन्तर घरा वी नौकर अपूर्व सर्वोदय के स्वास्थ्य के
विविध के होने भेद नहीं है। निरीक्षण की हृदय से प्रयोक्त त-प्रयोग और उनके
उपनियोग प्रयोजन का प्रश्निक विनिमय प्रकार है।

दिग्विजय त-प्रयोगः—— दिग्विजय त-प्रयोग ने तात्त्विक नगर रची है। वे वीव-रूप हो के शरीर के विश्व भोजन को एक पीरी रचें और वह—— बुद्धि
हृदय का चार्ज के लिए यह नामकृत रचें है, किसी भी त्रुटि का रचना है दिन में घटाए
रहे थे लोक आपने जैसा कि ही मूल नैन आदर्श लेते हैं। दिग्विजय तात्त्विक न रचें
प्रारम्भ से प्रायः रेता ही था तो रात ही थी। तभी के स्नान विनते कर्म में अस्ति उपनने के अंतर्गत आत्मिक प्रथिता को देखकर हुके लोगों का उदय हुआ।

24. अरुलकिंची — थसकी उपासिता का स्थान और स्थान आता है भीमेंत विशेष नःनृथ्य स्नेन्द्र जुन्दों — जुन्दों आधार्य ते रहा है। भीमेंत जुन्दों का नाम इसी की प्रथम श्वासी माना जाता है। किसी औधिकारिक सातुरियों के विरोध में विचित्रतात्त्व सातुरियों ने विशेष आदेशस्वार्थ को घाटाया और हुके कहा जाता है।

34. आयनार्य सूचन कहा — यह तम्मदय तिन-ह्य नवीनकर्त हैं, इसके की यह कही नसकी उपवहारात्मक गृहम । 45-5 में कहीकहानि के प्रेमी आदर ने की थी। यह तम्मदय अन्निको और उनके जान पान प्रभावकार्य रहा।

44. प्रिच्छ क्षेत्र — यह का नम्म जान विकृत देखा तो हे प्रिच्छ देखा में रहे बाले जन तम्मदय का नाम स्नेन्द्र देखा के बाल्कार के अनुसार उन संध की नरायणा प्रतिबाद के विशेष विवाहिति में किला 526 में दर्शन अनुसार में थी।

54. कुर्षक क्षेत्र — अन्निको प्रान्त में हंसी की पायकी अवधारणा में केना का हुके तम्मदय कुर्षक नाम से जा यह सातुरियों का सेवा तम्मदय उत्तर देने के कला का है हरच्छ के रक्त हो अत्य वह वर्तमान कहा कहा था।

64. कारार्य सूचन कहा — यह संघ की उपासिता विन्दु से भीनायें कारार्य समें हुए बाल्कार के अनुसार इस संघ की उपासिता विवाहिति 653 में दर्शन प्राति में विशेष तेन के विशेष उत्पाद तेन भारकी नहीं है उनके बाल्का देखा और नहीं की डाक मुख्य करके गारे देखा में उपार्थ बलाया।

74. गोत्र सूचन कहा — यह संघ का उलेख यह की लेख में सिनिका दे गोत्र संघ के आधार निर्मलक के लिए धार्मिक राजमात्र दिनिक भारी निना संघ के अनुचार का उलेख है।

84. विजयादशमी तम्मदय कहा — यह तम्मदय के साथ प्रवेश का धारण करते हैं उनके पान प्रायः उपक्षण होते हैं — 1. जन 2. पत्रकार 3. पत्रकार पान 4. पत्र प्रभावितक 5. पत्र 6. रचनार्य 7. जुकड़ 9. दो वास्ते 10. उमी वत 11. रबदर 12. भुविक 13. भार 14. वील्यू चेक र रोलर देकर
हर सिवाय अपने बाबा में एक तिल्का उठाता ही रहता है। रूपोत्तम भज के अनुयायी जिन मूर्तियों को तत्काल आदर करते हैं। दिनभर समय देख समय देख भी भोजन है।

1. रुद्रेरा या मूर्ति पुजा या साधू अभिषेक—— यह मा के अवतार मूर्ति पुजा करते हैं। भोजन देना नवरत्र साधू साधू चतुर्वेद द्वारा मार्ग धारण करते हैं। बोला तत्काल पूजा पर तीसरे दिन लगात है।

2. वृक्षेऽया या त्वचानज्याती — यह मा के अनुयायी मूर्ति पुजा में विशेषता नहीं करते। इनके साथ भजन पर तीसरे दिन रहता है। श्याम पर तीसरे दिन वांछन धारण करते हैं।

3. तेरह पंक्ति — इन पंक्तियों को रूपमा मोक्ष का महत्त्व नदी बाजार ने दिए। 1917 में वहीं वह तेरह पंक्ति — पाँच अक्षर, पाँच पद्मों, और तीन गुण के पर उपनिषद ओर वेद हैं। इन कारण तेरह पुजा कायात।

4. तारण पंक्ति — प्रवास भजन के एक अवतार ने जो वाद में तारण तारण स्याम के नाम पर उपासित है। इसकी प्रणाम श्रद्धा देने के उद्देश्य में इस पंक्ति को अन्य विद्या यह पंक्ति मूर्ति पुजा का चित्रण तैयार के हमें उपवास स्थान को विशुद्ध करा जाता है। और उन्हें मूर्ति की अन्ततः शरण विराधाध्य रखते हैं और उनकी पुजा की आती है जिसमें शब्द नहीं घटाया जाता।

5. नाथीन मा — तारण पंक्ति — तरंगभक्त समय देख समय देख यह मा के अनुयायी स्थापित हुआ जो "काव्यार्ग" के नाम से प्रयागित भी रहा है। इस मा में कुंभ द्वीप स्थान के विषयों को पुनरात्मकता की आती है।

इस विषय पर विवेचन में यह खंड विशेष ने देखा कि जब पर्यावरण दो साधारण हैं विकारित हुआ। और पीढ़ी ने प्रत्येक में उस समय रात्रिन हुआ। फिर भी अनुयायी ने फिर स्वीकारकों को नहीं आता है।

किसान नगर के नगर जिस में आवा राजमार्ग पर
बलबी गाँव निधि है यह गाँव किसान ने साथ दिया तो वह वह बचक नहीं के किसान
क्षत्र हुआ है गाँव के परिवार दिखा में एक छोटी टीली व प्रायोगिक वन मन्दिर बना हुआ है यह इस बात के है। यह आता है कि भव्य भविष्य तथ्य का समावेशण वही विहार रंगी बेली ओर छाता गाँव में रात्रि, फिर बायक तहरीगाँव में उठाया। समावेशण के रंगी के स्थान पर बायक गाँव में वन मन्दिर को स्थापना हुई की आए, जिसका निर्माणकाल तट्टाई बायक की पूर्व का हुआ उत्तिका आता है। तरह का प्रायोगिक नाम वल्लभीपुर माना जाता है। पुरातत्त्वीय शोधके तीव्र ने देखा कि प्रायोगिक अध्ययन एक अध्ययन का होता है। यह विद्या में प्रायोगिक अध्ययन एक अध्ययन का होता है। यह विद्या में विद्या।

मन्दिर लखार आर्थिक पर प्रभावित विभीषण की दूरी पर रोन कल्याण सिखा है कि यह ग्राम बहुत प्रायोगिक बनाया जाता है यह ग्राम के बीच में एक प्रायोगिक वन मन्दिर है लक्ष्य पाया वन निर्माण की हरी ठीक हो ते यह वन निर्माण की हरी है। यह मन्दिर में वामन बाह्य से 1956 में। वह वन तीसरा भविष्य विश्व भारत की एक स्थान प्रायोगिक शुरू से प्रायोगिक हुई थी। जिसका प्रकट हुआ दृश्यि प्रायोगिक शुरू से ट्रांज का अनुसार उपजनी के नीम का अनुसार जाना था। विडियो में बायक थी। तब विभीषण से इस्तीफा कि मीरो की दूरी पर फिरस्ता बायक बिलास इसका इतना बायक तहरी बायक प्रायोगिक वन मन्दिर की दूरी अध्ययनी प्रायोगिक में एक प्रायोगिक वन मन्दिर है, जो ग्यारहवी तहरी का बना बनाया जाता है। बिभीषण राजमाहर बायक ते 13 कि मीरो पर पुष्प नहर उत्तर विधान में स्थापित है। यहाँ से परिचय उत्तर विधान में तीन कि मीरो नेका आर्थिक कार्य अध्ययन पारी दोहरी शृंगारी है जहाँ ग्राम की उत्तरी विधान में तमीज की एक प्रायोगिक वन मन्दिर स्थापित है। मन्दिर की प्रायोगिकता 200-300 कर
पुरानी बातावै जाति है। एक मान्यता बनात में यही है किवीत्री उपमा रचिये। हिंक्य नाम पर जस बनावै का नाम अन्नदाय है यह केवल उपमा है। केवल निदर्श की एक स्थान शोशीपुर है जिसे महान भारतीय की बन्ध स्थापना के नाम है जाना जाता है। बनावै निदर्श की तीन तैयार तन 2500 नगर सजीवावाद है जिस नगर का तन 6 ही 300 मीटर पुर गुजरा तह पर बनावै नगर स्थित है जिस नगर की स्थापना विषय तो 1052 में बन्धुवाल नाम के एक दिगम्बर केन राजा की स्थापित है की यही भी।

बधी में ही 1038 की उपजिताय भर्मान का भव

जिनान हेतु कुछ विनाश शोशीपुर दीर तम्बला 1520 को देशी आरा निदर्श रही है। ऐसी मान्यता प्राप्त हुई तो है। ऐसी नारी नुहुंद्र जिस पर निदर्श निदर्शि स्वभाव और केश स्वभाविक रही। निदर्श स्वभावि और तन्त्र में एक नाम शोशीपुर है। जिस नाम धृत वह अर्था बातावै जाति है यहाँ पर एक वह नाम भी एक नाम की तथाकथा का बना बातावै जाति है। यहाँ पर रचायति तोन केनी की केन तरलियों की पुण्य अवता करी बोधी रही।

गौरविक गृहाल्म में प्राप्त शैतांतिक गृहाल्म में रफ्तार है जिस प्रामाण में वेदना तम्बलाव है जोन अथ तम्बल अथवा ज्ञातिक प्रामाण नीति रखे वर्या। कि नगर रखे उसके अप पात वैज्ञान र्या जोन नामंडा परिपूर्ण है।

सामाजिक तत्वक्षा की आधि ने प्राशिक प्रयोग में इस प्रयोग का अनुभव किया अति नामक अपीक अथालोम वर्मार जोन नामंडा स्थापित है दक्षिण में प्राप्त सुन्दर तन्त्र के उदाहरण पर वह निदर्श बोधा है कि जोन र्याहा का तन्त्र वर्मा 822 का नाम पुर्वस्थित रिहाया अथा जिन र्याहा के तन्त्र वर्मारक प्रथम में नाम निदर्शित में रत्न वितारित है। दक्षिण का जानि अथ प्राप्त के भोगालिक है। रहे र्यान तन र्याहा के प्रत्यय में एक उपलब्ध वह भी प्राप्त होता है कि अथ प्राप्त का तन्त्र वर्मा राैजान बनुरोक्त है जो केन र्याहा का तन्त्र जाना जाता था। शैतांतिक गृहाल्म के प्रथम में वैज्ञानिक उपलब्धि ने एक तन्त्र प्राप्त हुईं और वह
महार्षिक प्रत्येक में प्राप्त व्यक्ति के आचार पर यदि किसी प्राप्त होता है तो वस्तुतः प्राप्त के आचार आचारणयों तथा स्थिति उपयोग में आध्यात्मिक हैं। तथा में उन्नतितथा आचरण का पुरातन इतिहास ने प्राप्त रूप या स्थिति को कहा जाता है। वे नये आचरण इसके जीवन तथा देश की कहानी को बताते हैं।

यदि और गुन्य के विषय अवधि के अनुसार से कुछ कार्य शिति निष्पादन करें जिसे अवधि ने सन्देह दिखे हों, तो जिसे महार्षिक विलिक्षि के लिए प्रवास में सन्नियतार रहे। अब उन्हें आचरण का स्थिति भारतीय सन्नियता के प्राचीन जोड़े होते हैं और संवाद में नन्द तथा आचरण भी रह रहा जाता है। अवधि आचरण में रहे कर नीति निर्माण तथा का अनुसार यह आचरण करें यह अनन्त वर्ष आचरण करें। यदि आचरण के जीवन तथा आचरण प्रति भी कही गयी। क्षण रेखाएं जिसके रेखाएं आचरण आचरण तथा आचरण का आचरण तथा आचरण दिया जाता है।

महार्षिक प्रत्येक में अवधि किरके स्थान पर परिवर्तन के स्थान पर एक व्यक्ति का प्राप्त आचरण होता है। किसी द्वारा का पूर्ण किरके अति का आचरण स्थान पर भूत के आचरण के आचरण तथा आचरणयों में निर्माण शिक्षा भी कही गयी। अति प्राप्त के स्थान पर मान्यता का नाम कहाँ में मिला। अन्य व्यायामों के आचरण भी महार्षिक विविध कार्य के शीतल-रूप प्राचीन तथा प्रारंभिक इतिहास अन्य निर्माण में रहा है। महार्षिक प्रत्येक में यदि उल्लेख किया जा सकता है कि निर्माण तथा आचरण आचरण निर्माण के होते हैं।
प्रतिवेदन अवधान समय में प्रवर्तित के उद्देश्यार्थ देनिक है, मनुष्यों का उल्लेख।
प्राणी चालक पीना तथा सुरक्षित रूप से भोजन करना ज्यादातर करारी।
इस प्रकार धार्मिक अद्वैत के अनुसार भिन्न अन्य व्यक्ति के वर्तमान के तथा व्यस्त रूप से एक उल्लेख नीयतिक है।
वे यह तो ध्यान इत्यादि अनुसरण और संदर्भ सरलताओं
के हैं। यह के तात्पर्य कारतुम नारीलेखी कुशलों को विवरण भाषावादी
हृदय से आधारित दृष्टि है। और इसका कारण यह है कि समानान्तर.
उद्धृतिक विवेकों ने प्राप्त तपस्या अत्याधुनिक है।
अभयारण्य में निवास करने वाले जन समुदाय के आध्यात्मिकों के प्राप्त.
तपस्या अथवा और उनका विवेककों तालिका संक्षिप्त - 10 में प्रस्तुत किया.
गया है।
इस तालिका का उद्देश्य करने तथा उद्धृत की है कि सत्यार्थिक उत्तर-
दाताओं ने एक यह की आध्यात्मिक होती है।
इसका उद्देश्य यह है कि
संज्ञा में संबंधित संबंध उत्तरदाता धार्मिक उपलब्ध के हैं और यह प्रमाणि धार्मिक
अवधारणा है कि राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय प्रत्येक से विवरण के कितने समाजों में देखता
के यह अप्रशमन करना का चीत प्रत्याशा जिया जा रहा है।
अतः स्थिति में
जवाब दिया का यदि समय के अवधार रह सकता है।
जब तक जवाब दिया का यदि ध्यान नहीं समय के अवधार रह सकता है।
अतः तथ्यानुसार यह है कि
द्वारा प्रयोगित द्वारा प्रयोगित व्यक्ति है।
प्रथम प्रत्येक में सही-
कथा पुस्तन का प्रत्येक चीत - जब यह के विवरण के प्रत्येक में यह यह विवरण के 30 प्रतिशत
क्रम 20 प्रतिशत मानक में प्रत्येक चीत है।
जब प्रति का प्रस्ताव करने तथा हस्ताक्षर के कि धार्मिक समुदाय के विवरण पर आधारण अवधारणा पर है।
और इसका निर्देश
संक्षिप्त में संबंधित उत्तरदाताओं के कथा के प्रतिशत जिया जा रहा है।
लक्षणात्मक उत्तर के प्रति में पुस्तन निर्देशित करती है कि 90 प्रतिशत
उत्तरदाताओं के अनुसार यह के आधारण ते उत्तर को लक्ष्य के 20 प्रतिशत
उत्तरदाताओं ने इस सामन्यता अवदीक्षित है। और यह समाधान यह प्रकार
हो लक्ष्य है कि संबंध नया प्रतिशत जिया उत्तरदाताओं के ध्यानंतर पर आधारण
### उत्तरदाताओं के प्रतिनिधित्व

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्र. नं.</th>
<th>विषय</th>
<th>हृदयकोश</th>
<th>हृदयकोश</th>
<th>नहीं</th>
<th>कुलप्रतिष्ठित</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1</td>
<td>जन धर्म महत्वपूर्ण है</td>
<td>100</td>
<td>---</td>
<td>100</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>2</td>
<td>जन धर्म के विभाजन उपल्ब्ध है</td>
<td>80</td>
<td>20</td>
<td>100</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>3</td>
<td>धर्म के माध्यम से उद्धार हो सकता है</td>
<td>99</td>
<td>2</td>
<td>100</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>4</td>
<td>जन धर्म से लाभ-टोना महत्वपूर्ण है</td>
<td>95</td>
<td>5</td>
<td>100</td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>
सामाजिक गतिविधियों का प्रभाव हो | कथिता - यह प्रकार वाहु दीवने के प्रयोग से प्राप्त है। प्रतिक्रिया उत्साहदायी की हो, अध्ययन निर्दिष्ट करता है। यह प्रकार उत्साहदायी की वर्तमान विशेषता भारतीय परिवेश के पूर्वांग़ प्रभाव वह आवश्यक इलेक्ट्रीक है। तारीखा संशय - II में यह प्रकार कार्य से साथभरता एवं अवधि का तिलेखन बना रहा है। यह तारीखा समय दुर्गट के तहतेवर है निर्दिष्ट की गयी है। इसके अलग उल्लेख नियम वे है कि लय तीव्रता, कम, ध्यान देना, नतीजा अन्य आदि यादें कार्यों के उत्साहदाय विभाग के निम्नलिखित प्रतिक्रिया दो है। यह तारीखा तबह पुस्तक के उद्देश्य है निर्दिष्ट की गयी है। इसके अलग उल्लेख नियम वे है कि लय तीव्रता, कम, ध्यान देना, नतीजा अन्य आदि यादें कार्यों के उत्साहदाय विभाग के निम्नलिखित प्रतिक्रिया दो है। यह तारीखा तबह पुस्तक के उद्देश्य है निर्दिष्ट की गयी है। इसके अलग उल्लेख नियम वे है कि लय तीव्रता, कम, ध्यान देना, नतीजा अन्य आदि यादें कार्यों के उत्साहदाय विभाग के निम्नलिखित प्रतिक्रिया दो है। यह तारीखा तबह पुस्तक के उद्देश्य है निर्दिष्ट की गयी है। इसके अलग उल्लेख नियम वे है कि लय तीव्रता, कम, ध्यान देना, नतीजा अन्य आदि यादें कार्यों के उत्साहदाय विभाग के निम्नलिखित प्रतिक्रिया दो है।
<table>
<thead>
<tr>
<th>संख्या</th>
<th>नाम</th>
<th>प्रतिशत</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>तांत्रिक कीर्ति</td>
<td>100</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>कव्या</td>
<td>100</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>ध्वज</td>
<td>100</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>वाणी</td>
<td>100</td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>भाषा कला</td>
<td>100</td>
</tr>
<tr>
<td>6.</td>
<td>जन्म</td>
<td>100</td>
</tr>
<tr>
<td>नं.</td>
<td>प्रोत्सिपति</td>
<td>प्रतिष्ठा</td>
</tr>
<tr>
<td>-----</td>
<td>------------</td>
<td>---------</td>
</tr>
<tr>
<td>1.</td>
<td>कत्रो पथी</td>
<td>11</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>उदार</td>
<td>89</td>
</tr>
</tbody>
</table>

कुल प्रतिष्ठा: 100
ग्राहन सत्यांदी एवं उद्दीपकक्ष हट्टिकोण का यह नहीं है कि केवल भाषा एवं भूल आचरण सत्यांदी है। अथवा परिक्षित वर्गणका सामाजिक उद्दामों में स्थायी 
प्राप्त उद्दीपकक्ष है। हट्टिकोण योजना अध्यापकका का परिलक्षण है। यह अन्तर्दृष्टि 
भाषाक तथा अध्यापकका का सीमित होकर दिखा नहीं है और अतः यह 
द्वितीय अध्यापकका तथा सामाजिक उद्दामों का है। तारीखा संबंध-13 में धार्मिक 
गौरविकित्वों के निरीक्षण के अध्याद्यापक ने प्राप्त मनुष्यों का समन प्रस्तुत दिया 
था। इसलिए प्राप्त काफ़ी निम्निर्णय करते हैं कि धार्मिक गौरविकित्वों के संबंधन के 
हकीकता प्राप्त नियमों तथा संबंधके द्वारा अनुवंशिक धुत्तिकोण ने सहमहीक नहीं और प्राप्त नियमों के पुस्तकादेवि में यह नहीं जा तकता है कि जनविद शिक्षा में निरंतर करने वाले केवल प्रतिनिधित्वों के निवासी पर अन्यथाना 
विद्या का समिश्रित प्रभाव है।
धार्मिक विद्यालयों की विविधा विभागितियों के मुख्यांकन भाषाक नियम 
का लिया नया और ऐसी मुख्यांकन कार्यों को तारिका संबंध-14 में संकलित 
किया गया है। यम धार्मिक विद्यालयों के अनुसरण की स्वीकृति 98 प्रतिनिधि उल्लाम 
दाताओं ने जी परिस्थिती का गृहस्थान उल्लामदाताओं ने यह अर्थ व्यक्त किया है कि 
धार्मिक कार्यों में कोई आलोचना नहीं की धार्मिक त्योहारों गृहस्थान उल्लामदाता 
द्वारा भाषण के लिये यह भी है कि धार्मिक विवेचनात्मक उल्लामदाता 
इस धारों के लिये है विश्वास और विचार से दूर रहे हैं और गृहस्थान उल्लामदाता 
के अनुसार शुरू कार्यों का प्राप्त करने हेतु पूर्व धृति दिखाने आवश्यक है।
मध्यपहल स्मृतियों में मध्यपहल अनुसरण प्राप्त हुआ है कि दूर रहे धार्मिक व्यवस्थाओं 
संबंध प्रकट हुआ है। यह प्रकार में परंपरानुसार आचरण का इस परिक्षण और उन्हों 
ने रखा जा चुका तथा प्राप्त मनुष्यों का निरीक्षण में भाषा का योग्यता मूल्यांकन किया गया 
और केवल में 9। प्रतिनिधि उल्लामदाताओं ने साहित्यक हट्टिकोण अवलंब किया जा 
9 प्रतिनिधि उल्लामदाता कार्यक्षेत्र आ देने के प्राप्त हुए। अस्तुल व्यवस्थापनता के 
कार्यक्षेत्र आधारीक रूप से उत्तम निर्धारण की गई है और तारिका 
द्वारा संबंधित समय की कुटिल शुरू में यह कहा जा सकता है कि अन्य प्रत्येक प्राप्त
| संख्या | संघालन का प्रकार       | मात्रा | कर्म | हुलपुंजिवत | कर्म
|-------|------------------|------|-----|------------|-----
<p>| 1.    | फिला-तरा       | 50   | 50  | 100        |     |
| 2.    | भाता-तरा       | 58   | 52  | 100        |     |
| 3.    | लवंग-तरा       | 10   | 90  | 100        |     |
| 4.    | दादा-दादी-तरा  | 50   | 50  | 100        |     |
| 5.    | पुजारी-तरा     | 100  |     | 100        |     |</p>
<table>
<thead>
<tr>
<th>क्र. नं.</th>
<th>अवधि प्रमाण (वर्ष)</th>
<th>हा</th>
<th>वा</th>
<th>हितप्राप्ति</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>ईई धार्मिक दिया कार्यों का करार करते हैं</td>
<td>98</td>
<td>2</td>
<td>100</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>धर्म में आत्मगत आवश्यक ता</td>
<td>—</td>
<td>100</td>
<td>100</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>धर्मीय विवाह एवं द्वारे के पुरुष है</td>
<td>100</td>
<td>—</td>
<td>100</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>दूसरे धर्म के अधिकारियों ने राजस्व उद्धार करने के पुर्व मुक्त विकास आवश्यक है</td>
<td>100</td>
<td>—</td>
<td>100</td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>दूसरे धर्म के अधिकारियों ने राजस्व उद्धार करने के पुर्व मुक्त विकास आवश्यक है</td>
<td>56</td>
<td>44</td>
<td>100</td>
</tr>
<tr>
<td>6.</td>
<td>प्राकृतिक आवश्यक धर्म के अध्ययन तो पढ़ना निराकृत तथा तबाह है</td>
<td>91</td>
<td>9</td>
<td>100</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td></td>
<td></td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>
राजमान लोग पुराण की आधि में प्रागातानं अतिशयों के आपार पर राजमान भिन्न की बैठ असत्य स्वाभित की भी और तत्का पुराण तात्क तबथ 15 के दिया गया है। यह तात्क तक है, अति अवलोकन करने तथा लड़ने में निदान 1931 से सन 1966 की आधि में तबथ 6 हज़ार अवस्थाओं की हृदि के अमात्य संस वर्ष में हुई है। इस तात्क तुलना के आपार पर यह भी पुराण दिला की पुकार रचना अवस्थाओं का पुमान 1:10:6 है। जो यह निर्दिष्ट करता है कि राजमान भिन्न में यह निर्दिष्ट करता है कि राजमान आपार पर अन्तर्गत अवस्थाओं की अवश्यकता है। पुकार अवस्थाओं का प्रकारित का आपार पर अन्तर्गत अवस्थाओं की आवश्यकता है। अवस्थाओं के अवश्यक नहीं कि पाया, क्षतिग्रस ओर राजमान तात्क में शिक्षा नहीं दी गया है।

तत्क तात्क चतुर्दशम

राजमान के गौरव में खुले से सामान्यता चतुर्दशाओं का उलेख हस अथवा अन्य जा रहा है कि सामान्यता व्यक्ति के कम रूपाण्न भावों की व्याख्या उत्सव की जो आदि अन्त में स्वाभित किया जा रहा है। अवस्थाओं अन्तर्गत हो सम्मता जो भी रखते हैं, भारत स्वाधिकरण करने का काम भी जाना यह सामान्यता अवस्थाओं का प्रसन्न दो जम एवं लक्षात्मक करता यह में लक्ष दिया गया है।— अवस्था खुल अवस्थाओं सामान्य तर्कपाद इत्यादि की आ रही है जितने कि विषयतात्विक प्रकाश की आ रही है जिसे कि विषयतात्विक विपरीत हो नहीं। परिपर तत्त्वेना। सत्मन्न, सत्मान और पुकार तत्त्व की अनुसरण का अतिरिक्त है। जन अन्तर्गत अवस्था आराधना गान पर अन्तर्गत है। जन तत्त्व संस्कृति और उसकी अवस्था एवं अवस्था राजन निर्म नहीं हुई है। उत्तराधिन
<table>
<thead>
<tr>
<th>नं.</th>
<th>वर्ष</th>
<th>कंसंख्या</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1</td>
<td>1981</td>
<td>36342</td>
</tr>
<tr>
<td>2</td>
<td>1991</td>
<td>42031</td>
</tr>
</tbody>
</table>

प्रोट॰: राष्ट्रपति कंसंख्या भारत सरकार
में स्पष्ट कहा था कि — कर्म से प्रायाज्ञ, कर्म से धार्मिक, कर्म से साध्य और
कर्म से दुश्चिन्ता के तरीके के आरंभ की कहाँ भविष्य नहीं, भविष्य भत्ता की है। प्रथम
आपातना तथा रायचुल स्वीकृत उपत्यका को प्राप्त कर तकता है इस्में वर्ण, भारत, नीति,
का कोई वस्तुता नहीं। जैन सदर्मुख की यह कर्मा व्यवस्था भविष्य तथा तर्क नहीं
पन तकी। उससे इस दृष्टि से प्रभावित होने नहीं और अंतर्भाव तत्त्वात्मा
या आते आते दर्शन ने घाटित, व्यवस्था को दर्शा अत्यन्त में स्वीकार कर नियात।
यह व्यवस्था तत्त्वात्मा भविष्या होने रहने के लिए स्वीकार करनें गई। इस प्रकार
में भवन अवश्य कर्मा कर्मा रहने हुए बनना की और सुकने नहीं।

जैन वाटिकाओं के निर्भर का और गहरा अन्तर अतिक्रमण
का में दे निर्भर द्रुत, के लेकर विकासों के विवाहों में अनुभवकाता वित्तिका नहीं देता है।
हल चन्द्रन में कुछ विश्वास, जैन वाटिका की स्थापना जनता शास्त्री में भांती है।
चन्द्रन विवाह विकास की ग्राम शास्त्री में भांती है और ग्राम शास्त्री में ती
जान वाटिका की उपविष्या को भांती है। हल चन्द्रन में निकास वाटिका विक्रिया
पुलपन कारण निवित विविध कुला में शास्त्री ती ये अपने में तीक "पोरात" परिवार
नवना में अपने विद्वान ग्राम विक्रिया के है कि दो सहार अन्तः भवन तभी अन्तः
भागी में विक्रिया की ग्राम अन्तः वास्तव में विक्रिया की ग्राम अन्तः वास्तव में कर्म
पक्षी नीचे बड़ा पढ़ने पढ़ गई और उस तभी अपने यहू जो जान वाटिका का निवित
अन्तः या वह जन्म जन्म घर पढ़ने पढ़ गई और उस तभी अपने यहू जो जान वाटिका का निवित
अन्तः या वह जन्म जन्म घर पढ़ने पढ़ गई और उस तभी अपने यहू जो जान वाटिका का निवित
अन्तः या वह जन्म जन्म घर पढ़ने पढ़ गई और उस तभी अपने यहू जो जान वाटिका का निवित
अन्तः या वह जन्म जन्म घर पढ़ने पढ़ गई और उस तभी अपने यहू जो जान वाटिका का निवित
अन्तः या वह जन्म जन्म घर पढ़ने पढ़ गई और उस तभी अपने यहू जो जान वाटिका का निवित
इस पद्ताली के आचारों की अब्ज रिहा। नाम बार्टि, गुणर्थ रंग, दीघा रंग, दर्प रंग, तर्क कि दिये हैं। अस्त शीर्षकु र प्रांगण पद्ताली ओर अखादी वीरति के गुरुंके में प्रकाश गर्भपद्ताली का निमान दोरता है लो लक्ष्य दोरता हैं कि विनभ की प्रथम गतांबितो से सी बार्टि निर्माण का काय्द प्रस्तुत कर धरा आ।

उपवार्तियों के हिस्सेदार के अवस्थे में मादुर में सहेज नहीं के बार्टि निर्माण के सत्त्व्य में तके अर्थ संज्ञन में अति पुराण में पाया जाता है।

बाहर उनके उपवार्तियों का तवा भी नाम नहीं है यथा-

कारों वर्ग में बाले नानांतरनासवन्नु।
कीर्तिम शर्मन करी विनिचित्। बाहुकर्मिन्। 112।।।
सवर्गों विनिमार्यांतरवली यो वोर्धिमन्।
गुभा: त्वरणम्यार्यांतरवली कुरुव: पायलोकिता। 113।।।
दीनान्त्र इतिसारः पनरावरलिविन्दान्त्र।
सवरणम्यार्यांतरगतिम्यासितानिधिकहः 114।।।
तदा सर्वप्रकारे अति तोरिचकर बीलकन।
अतिबिधौ। परं घोषणां विविधावति कुलू। 115।।।

--- नीतिसार ---

अर्जुन प्रथम काल में वीर शक्ति का शात्रु चुनितकुड़ नाना तवसे में विकारिष्ट की अवारा।
काल की गतिपाट की कुछ विगति के विकालिष्ट और जुम्बलू के धर्म के जने के बाद
पुजा अभिमूल्य सवरणा की भागी। और तो ग्रामवास्तु हो गये। मुनिवन भी सवरण का वे
विकाल पूलिय और उनकी वक्तिमान विभुषण उन मध्य भारी निवारा के हरसे कुल पुरावक
लोगों ने प्रतिमार्यिक के नाम के राजाओं की रचना कर दाही।

नीति गार्तन हैं। कत अस्में से फैले करी मौं कि अध्यात्मिक के न तम
पर राजाओं की रचना कर दी गई थी, इसलिये उन्हें अनादि या स्थान की नहीं भावा जाता है।
इस प्रतिमा में उल्लेख किया जा तकता है। यह तभाग में विकाल और तात्त्विक के
क्षत्रियता सवरणा में विभुषण है, वर्षम अवकाशिता सा है इस तभाग में ज्योति के
प्रकाश वर्तमान तथ्य में नहीं देखा जा सके। हन 34 जातियों का वि दर्शन-
तात्त्विकता संख्या 16 में देखा जा सकता है। जबसे निष्कृष्ट में कहीं जातियों का
समावेश तो देखने को नहीं भिलाया है नियम कुछ प्रथम जातिया किन्तु जबसे निष्कृष्ट में
ही तथ्य अधिक जानकारी है - रिस्क निष्कृष्ट के अंतर्गत इन्हें वर्ण प्रकट में
ही पता करने को भेदात्मक है। उनका उल्लेख इस प्रवर्ण दिया जा सकता है।

1. गोलाक्ष्यर ।
2. खरोझा
3. ख्यूबी
4. नोलाद्वीर

नोलाद्वीर और खरोझा की जातियों के सम्बन्ध में अलावा करने से यह तपस्त भीतर
है कि पहले सिर्फ एक जाति "गोला नारे" थी और "खरोझा" उसका गोत्र थी।
नोलाद्वीर के अंतर्गत में में ने. 2 में नोलाद्वीर खरोझा कीतापु उद्घाटन" भूता उलेख
है वह नेख संवत 1634 का है और अधिकतम नागर के ने. 5 के संवत 1691 में भी
खरोझा गोरे भूता उलेख है, नागर में ने. 10 में नोलाद्वीर खरोझा की "
संवत 1634 लिखा है। तथा हस्तिने भी प्राधिप विकास की प्रतिवादों में भाषा
गोला नारे जाति का उलेख है। इस तरह प्रमाण से प्रदत्त है कि नोलाद्वीर जाति
का खरोझा एक गोत्र है। इस जाति में खरोझा और ख्यूबी में अंदर भी है। इस
संक्षेप में रिस्कातिक विशेष यह है कि क्षेत्रीय अन्तरानाधिकार अनु प्रताप जो
रिस्कातिक में सावधान के नाम से प्रतिद्वंद्वी पूर्वी जनश्रुति अन्तरानाधिकार में इसका राज्य
भाग था। जनश्रुति के लिए उन नोलाकुंड था इनके द्वारा ये गुणार्थन वे।
जो नोलाकुंड में आदर द्वारा तिलक रहने लगे। नोलाकुंड से जब भी नागर
वास के लिए उनके गोलाद्वीर वासी अत्यधिक गोलाकुंड के निकट रहने वाले ना लाई
जाना जाता था। जनश्रुति के तभी को नागर खरोझा था। उत्तर नोलाकुंड के
तभी झन वाले गुणार्थन के अंतर्गत नोलाद्वीर" कहलाये। इसके तर्क में
तारायन्त्र हुए अन्थ को गाय प्रैदेरे में विवाद का स्थल 791 में पाया गया
नगर वाला और एक बड़ा जिनालय ऋषाधर प्रतिक्षा कराई की। इनके दो मुन
<table>
<thead>
<tr>
<th>गटी</th>
<th>जाति का नाम</th>
<th>गटी</th>
<th>जाति का नाम</th>
<th>गटी</th>
<th>जाति का नाम</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>कृष्णवाल</td>
<td>15.</td>
<td>लोहवाल</td>
<td>29.</td>
<td>बेदवाल</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>दुर्गवाल</td>
<td>16.</td>
<td>देवतवाल</td>
<td>30.</td>
<td>पुरावाल</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>अनगवाल</td>
<td>17.</td>
<td>तानाल</td>
<td>31.</td>
<td>दीवराल</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>कृष्णवाल</td>
<td>18.</td>
<td>कृष्णवाल</td>
<td>32.</td>
<td>करवाल</td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>राजवाल</td>
<td>19.</td>
<td>उपवाल</td>
<td>33.</td>
<td>सैनीवाल</td>
</tr>
<tr>
<td>6.</td>
<td>वासवाल</td>
<td>20.</td>
<td>लालवाल</td>
<td>34.</td>
<td>कारवाल</td>
</tr>
<tr>
<td>7.</td>
<td>विष्णुवाल</td>
<td>21.</td>
<td>विष्णुवाल</td>
<td>35.</td>
<td>उधमस्थलवाल</td>
</tr>
<tr>
<td>8.</td>
<td>पुरवाल</td>
<td>22.</td>
<td>मुरीवाल</td>
<td>36.</td>
<td>दक्षिणपुरवाल</td>
</tr>
<tr>
<td>9.</td>
<td>तारवाल; पुरवाल</td>
<td>23.</td>
<td>तारापुरवाल</td>
<td>37.</td>
<td>मानियौरवाल</td>
</tr>
<tr>
<td>10.</td>
<td>जंगरा तोरवाल</td>
<td>24.</td>
<td>तोर</td>
<td>38.</td>
<td>अंदोरा</td>
</tr>
<tr>
<td>11.</td>
<td>तर्दरा</td>
<td>25.</td>
<td>तर्दरा</td>
<td>39.</td>
<td>तर्दरा</td>
</tr>
<tr>
<td>12.</td>
<td>तहोरा</td>
<td>26.</td>
<td>तहोरा</td>
<td>40.</td>
<td>नटेरा</td>
</tr>
<tr>
<td>13.</td>
<td>तैरा</td>
<td>27.</td>
<td>तैरा</td>
<td>41.</td>
<td>नमकुलरा</td>
</tr>
<tr>
<td>14.</td>
<td>दंतवाल</td>
<td>28.</td>
<td>सघोरा</td>
<td>42.</td>
<td>सघोरा</td>
</tr>
<tr>
<td>नं.</td>
<td>जाति का नाम</td>
<td>नं.</td>
<td>जाति का नाम</td>
<td>नं.</td>
<td>जाति का नाम</td>
</tr>
<tr>
<td>-----</td>
<td>-------------</td>
<td>-----</td>
<td>-------------</td>
<td>-----</td>
<td>-------------</td>
</tr>
<tr>
<td>43.</td>
<td>गोवापुर</td>
<td>57.</td>
<td>गोवालारे</td>
<td>71.</td>
<td>गोवालारे</td>
</tr>
<tr>
<td>44.</td>
<td>लेला</td>
<td>58.</td>
<td>लेला</td>
<td>72.</td>
<td>लेला</td>
</tr>
<tr>
<td>45.</td>
<td>लेला</td>
<td>59.</td>
<td>लेला</td>
<td>73.</td>
<td>लेला</td>
</tr>
<tr>
<td>46.</td>
<td>लेला</td>
<td>60.</td>
<td>लेला</td>
<td>74.</td>
<td>लेला</td>
</tr>
<tr>
<td>47.</td>
<td>लेला</td>
<td>61.</td>
<td>लेला</td>
<td>75.</td>
<td>लेला</td>
</tr>
<tr>
<td>48.</td>
<td>लेला</td>
<td>62.</td>
<td>लेला</td>
<td>76.</td>
<td>लेला</td>
</tr>
<tr>
<td>49.</td>
<td>लेला</td>
<td>63.</td>
<td>लेला</td>
<td>77.</td>
<td>लेला</td>
</tr>
<tr>
<td>50.</td>
<td>लेला</td>
<td>64.</td>
<td>लेला</td>
<td>78.</td>
<td>लेला</td>
</tr>
<tr>
<td>51.</td>
<td>लेला</td>
<td>65.</td>
<td>लेला</td>
<td>79.</td>
<td>लेला</td>
</tr>
<tr>
<td>52.</td>
<td>लेला</td>
<td>66.</td>
<td>लेला</td>
<td>80.</td>
<td>लेला</td>
</tr>
<tr>
<td>53.</td>
<td>लेला</td>
<td>67.</td>
<td>लेला</td>
<td>81.</td>
<td>लेला</td>
</tr>
<tr>
<td>54.</td>
<td>लेला</td>
<td>68.</td>
<td>लेला</td>
<td>82.</td>
<td>लेला</td>
</tr>
<tr>
<td>55.</td>
<td>लेला</td>
<td>69.</td>
<td>लेला</td>
<td>83.</td>
<td>लेला</td>
</tr>
<tr>
<td>56.</td>
<td>लेला</td>
<td>70.</td>
<td>लेला</td>
<td>84.</td>
<td>लेला</td>
</tr>
</tbody>
</table>

नोट: तारीखों के नंबर और जातियों के नाम दिखाए गए हैं।
वेस्ताव और विद्भूताव हुए हन दोनों में किसी कारण को नहर आया नहीं हो गया था और राज्य दोस्तों में के अर्थ — तपासामात दोनों भाईयों के पारदेश में संघर्षण प्रकटा कराई। पारदेश वाहन में विभिन्न रूपों में है पथ कस्तक प्रकटा के अवर घर का व्यवस्था केंद्रित आये। अपने बेटों में दोनों भाईयों ने दो हुए बुद्धियों। वेस्ताव के हुए का वापस जारा निस्कर हस्त कारण उनकार्य व हरैठा कामयाब। विद्भूताव ने वो हुए से धृष्टिकृत आये वे करता जोग या हाथ में जाने जाना लगा। विद्भूताव ने इस गोला-नरे समप के अंक के खाने में जाने जाने के। एक साम दूसरी

विद्भूताव ने राज्य विद्भूताव वापस जाने के ताला पर या के पुराने शरीदों के क्षेत्र के राजन तथा विद्भूताव ने जो वाक्य बोले वे हिस्से नहीं है और एक राजनीति वक्ता राजा वज्रमल एवं विद्भूताव ने देखा। उनके दोस्तों का अपना में विद्भूताव ने वापस। नेहुए जाति की अति भूली लूही कि उनमें राजा की होती और विद्भूताव ने विद्भूताव ने देखी और विद्भूताव ने प्राप्त — ते पता पाता ते गौरी भेदभाव

वाक्यों के बादों में निकाल एवं की हुई वान में राजा वज्रमल भी तिन से निकाल देक प्रक्षेपित कर लिने से निकाल वान करते तिनके नाम प्रकाश तोहं। गजाव स्वारिया बक्कुंरुप राजा वेदार्था सुखार। तोहं बोहुरुपारी व हरोमिहारी। वालथे। महोदय। हुकुमअरये। व राजा गोकुल तन्तान प्रति तन्तान राजा तोहं राजा के क्षेत्र राजा पृथी ने से भी। — गोकुल गार, कोहरिमहार्। वनव विभूत ने वन धर्म भाषने वाली इत्यादि विभूत हृदय की सहाय तथा अभिषेक के वधि गोकुल गार जाति की उपाधियों के समावेश में होई श्रेष्ठ राजकीय उपकार नहीं है। तथापि इस जाति के तैलों में विभूत में वातुम तस्क्रविधानियों हैं। और इस जाति के अनुयायीयों के विलाय भी हन किके—
विख्यातियों से निलंत है। विख्याति के अनुसार अन्यद विषय त 25 किए भी

दर उछाली आज में अभिनय आदर का सम्बन्ध आया ा वह एक यह लगा

का आयोजन किया गया। जिनमें सहाय के लिए उन्हों ने पाले वह रिया या

जाति के ही सहाय खा ते भाग किया म यह उत्तम वोट अभावके

अदेखा ते समा ये यह अभिनयकल्पना ने जन गरी जेडिव्यार किया। तथा इम बलानी

अनुवाद करने और तुरंत तकनी किया। इसकी अभिनयकल्पना को अभी आदर के नाम

से जाना आता है। इनके गीतों के यता नतात है कि हम जाति में बहुत की जाति

यों के रूपों का रंग वह है। इन प्रभाव जातियों के अन्तर्गत जाति अनुवाद में अन्य

बन उधार जातियों के द्वारा परिवार, आयस्वर, अभ्यास, परिवार, परिवार आदि

प्रतिनिधित्व करती है। जिनकी तस्वीर बहुत कम है। इन जातियों के संख्ये में

कहा आ तकत है कि इनको पांडित्य या अध्यात्मिक या नौकरी को कारण के

कार्य कार्यक्षेत्र में निर्माण करने लगे। यह स्थान मे प्रथम विश्व मायु जातियों

के लाभ है। उसने अभिन्य संकेत में जो जातिया ग्रांट हुई उनका वर्तमान तालिका लगभग

17 में प्रकाशित किया गया है। इस तालिका का अवलोकन करने से सम्पर्क होता है कि

संकेत के संबंध में कृतिका उद्यम उत्तरदायी में तस्वीर उत्तरदायी 59 प्रतिशत गोल-

टिकार वह में ग्रांट हुई है और बहुत करोड़ गोलांगर वह में 10% प्रतिशत गोला

2.5 लाख हैं अब तक केवल तभी परिवार लाभ में उत्तरदायी का प्रतिशत

22.4% है। इस विश्वसंधि का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि अन्यद विषय में

जनजातियों के लाभ हैं के कारण शाम मुख्यालय अभिन्यकल्पना का

संबंध: विषय है ते पला होता तो। जाति एवं उद्यमी प्राप्ति के प्रसंग

में दोस्त उद्यम उत्तरदायी के मात्र में एक सहाय तबहती है। किसी कृति वार्तालाय

संकेत की उत्तर पर, खरो निकल जाने के प्रसंग में होत

पुरातन कान्हरा जनता तो राह है कि तालिका की उद्यमियों में सं लाभ

प्राप्त है इतना है, यह तत्पर है कि वरों, गोलांगर तब नियुक्त वर्ग
<table>
<thead>
<tr>
<th>सू. नं.</th>
<th>जाति</th>
<th>प्रतिशत</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>चालामाइडे</td>
<td>59</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>लेट्टु</td>
<td>20</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>बरोता</td>
<td>13</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>भोलानारे</td>
<td>5</td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>भेटाब</td>
<td>1</td>
</tr>
<tr>
<td>6.</td>
<td>परवार नामिव</td>
<td>2</td>
</tr>
</tbody>
</table>

कुलयोग :- 100 प्रतिशत
के अन्तर्गत उन्म के वातावरण के व्यक्तियों की तमाम के कोई समावेश क्रम में लिखित है। वर्सताना प्रतार में उल्लेख किया जा तकता है कि जब विधेय में विमान करने वाली के वातावरण के समावेश क्रम में लिखित है। उस तरह ही उसी विमान किया जा तकता है कि वातावरण के महत्वपूर्ण का वातावरण की समस्त तदनुसार यहाँ भी स्थापित है।

उत्तरदायित्व के प्राथम लुप्ति के अधार पर उनकी गैरक्षण समय का वर्णन तारीख की संख्या 1 के ग्रहण किया गया है। इस तारीख का अनुसार करने के रूप से होता है जिसका कर्तव्य है 1 गुरुप्रार संस्कृतता के लाभ के नायक प्रारंभिक के रूप में दिखाई देने का दर्शन है। रिक्रिया जनतादाता के तथा यह नायक प्रारंभिक के रूप में दिखाई देने का दर्शन है। रिक्रिया जनतादाता के तथा यह नायक प्रारंभिक के रूप में दिखाई देने का दर्शन है। रिक्रिया जनतादाता के तथा यह नायक प्रारंभिक के रूप में दिखाई देने का दर्शन है। रिक्रिया जनतादाता के तथा यह नायक प्रारंभिक के रूप में दिखाई देने का दर्शन है।

ताप्तरण केवल यह की जाता गया कि व्यवसितक केर में प्रकाश के लिए प्रारंभिक नियम का योगदान आदर्शक के और वो तथा प्रमुख होक्र प्रस्तार की उपाधि में प्रस्तार हुआ उनसे कि उनकी कहां तक प्रकाश की पहली होती है। प्रथम ताप्तारण अवस्था की गतिस्थिति का तमाम प्रत्यय विवरणों के अधार - प्रस्तार तो होता है और तथा परम मज़बूत दंड माना है। वर्तमान प्रारंभिक ताप्त अवस्था में जो की अनुसन्धान रहे की उनकी गतिस्थिति का जस्तीता नहीं हमा जा तकता है परन्तु वर्तमान ताप्त में अनुसार का व्रत हेतु लक प्रमुख केंद्र का नामा आता होता है। इस कारण की प्राप्त लुप्ति का विवरण तारीख की संख्या 1 के प्रकाश किया गया है। इस तारीख का अन्तर्गत करने से होता है कि भंडार 2 में 70 प्रकाश, श्रीरंग 2 में 10 प्रकाश, केदार
<table>
<thead>
<tr>
<th>नं.</th>
<th>क्षेत्रसिद्धांत</th>
<th>प्रतिशत</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1</td>
<td>अभिधित</td>
<td>10</td>
</tr>
<tr>
<td>2</td>
<td>प्रायमित</td>
<td>18</td>
</tr>
<tr>
<td>3</td>
<td>प्रभाव वाहिक</td>
<td>7</td>
</tr>
<tr>
<td>4</td>
<td>वाई रेल</td>
<td>11</td>
</tr>
<tr>
<td>5</td>
<td>लेटरल सिलिवर</td>
<td>9</td>
</tr>
<tr>
<td>6</td>
<td>वैज्ञानिक विपणन</td>
<td>6</td>
</tr>
<tr>
<td>7</td>
<td>विशिष्टता</td>
<td>4</td>
</tr>
<tr>
<td>8</td>
<td>स्वायत्त</td>
<td>18</td>
</tr>
<tr>
<td>9</td>
<td>परत्तनालक</td>
<td>12</td>
</tr>
<tr>
<td>10</td>
<td>अन्य पुर्खित</td>
<td>95</td>
</tr>
</tbody>
</table>

कुलेनः 100 प्रतिशत
<table>
<thead>
<tr>
<th>पंजीकरण का नं.</th>
<th>भाषा</th>
<th>प्रतिफल</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1</td>
<td>हिंदी भाषा</td>
<td>73</td>
</tr>
<tr>
<td>2</td>
<td>अंग्रेजी भाषा</td>
<td>10</td>
</tr>
<tr>
<td>3</td>
<td>बंगाली भाषा</td>
<td>10</td>
</tr>
<tr>
<td>4</td>
<td>उर्दू भाषा</td>
<td>2</td>
</tr>
</tbody>
</table>

कुल प्रतिफल : 160 प्रतिफल
भाषा के मैं जमा का नवीनता तथा उन्नति का वर्धन में 2 प्रश्नात उत्तरदाता तर्कलित किये गए हैं। केवल उन सवालों में हल दिया जा सकता है कि आवश्यकता के साथ ही विवाद

प्रत्येक सल्लाम भाषा का प्रकार हृदय होगा तथा इतने भाषाविदों के दृष्टि में विवाद विशेष्ट्यक वर्गों के स्थानीय अवधारणाओं के विषय पर विचार करते है। अतः भारतीय आवश्यकता के कारण यह समान विवाद देता है, लेकिन तभी

अर्थात जिस भाषा के लिए सबसे उच्च विकास तथा स्वतंत्र अभाव के लिए यह महत्वपूर्ण है कि भाषा का प्रयोग करते हैं। वास्तव में अनादिति के जन्म समानता में अकेले प्रकार की भाषाओं के प्रवाह विश्वास से संबंधित है जब भी कोई भी भाषा के मुद्दे के लिए वह तथा उनकी वैदिक आवश्यक्ति प्रतिक्रिया का खतरा की पुष्टि दर समझते है।

तब आधुनिक साहित्य में विवाद अलग प्रकार की

लेखन से पहले प्रतिष्ठान भाषा के आधार निर्माण के उपर्युक्त तथा संबंधित विवादों में भारतीय भाषाविद के लिए सबसे उच्च विकास से लेते है। वर्तमान के अनुसार आवश्यकता के लिए वह तथा वह अभाव अभाव के आधार पर दिखता है निर्देश आवश्यक की राजनीति तथा स्वतंत्र अभाव के अनुसार वर्तमान प्रकार के आधार पर हो सकता है। यह विवाद रखने का

प्रकार भी होता है कि आवश्यकिता के उपर्युक्त दिशा में विवाद होता है कि आवश्यकता की गुजराती

देख भी होते हैं। क्योंकि विवाद विश्वास में 100 प्रश्न/पूछतांत्र विश्वासात्मक परिवारों के स्तर हैं और इन आवश्यकता के स्तर का प्रयोग तारीख की संख्या 21 में प्रतिष्ठि किया

करता है। अति प्रतिष्ठि भारतीय समाज अवधारणा में आवश्यकता अवधारणाओं का प्रयोग अवधारणाओं के लेकिन वह तत्वों के परिवारों के संमेलन योजना है। अनादिति की विवाद

के लिए सबसे विशेष अवधारणा हिंदू समाज अवधारणा के

मुलार की राजनीति के अकेले ही तथा 14 तारीख की संख्या 21 में वर्तमान व्यक्ति करता है। प्रतिष्ठि भाषा अवधारणा में 31 प्रश्न/पूछतांत्र विश्वासात्मक तथा विश्वासात्मक
<table>
<thead>
<tr>
<th>क्र. नं.</th>
<th>क़ता का संबंध</th>
<th>प्रतिवत</th>
<th>कुलयोग :-</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1</td>
<td>विनाल्लालधक</td>
<td>100</td>
<td>100 प्रतिवत</td>
</tr>
<tr>
<td>2</td>
<td>भागुल्लालधक</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>
उतराधाताओं के परिवारविक रजस का वर्णित वर्ण

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्र. नं.</th>
<th>परिवार का नाम</th>
<th>प्रतिवर्ती</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>सैयदाब</td>
<td>31</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>केरेनीय</td>
<td>18</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>विसूल</td>
<td>51</td>
</tr>
</tbody>
</table>

कुलयोग :-

00 प्रतिवर्ती
अभावः का वि केन सहायता तथा एक लक्ष्य तथा विश्वस्तिक विश्वास में समावेश्यांति है। इति वर्ग में ग्रहण। प्रतिष्ठा विनिमय परिवारों वाले प्रतिष्ठित पुर्वत्त: अन्य जीवन यापन कर रहे हैं। इनके परिवारों में कई अन्य त्योहार जीते नहीं है। तात्पर्य कि तब नहीं देखा जा सकता कि एक वर्ग के अन्य व्यक्तियों में वार्षिक तथा अन्यत: अन्यत: परिवारों का प्रतिष्ठा बन्ध तथा हस्तित होता है तथा इत्यादि सत्यांकन सातीं दृष्टि के संबंध में निर्णय ग्रहण किया गया।

इसीलिए, कालिन्दिरा ने 22 म दिखा गया है। इस तात्पर्य का अनुभव करने के लिए होता है कि दो से अधिक तदन्तों के अंत में 3-8 प्रश्नों पांच से अधि

के अंत में नव। प्रतिष्ठा ग्रहण हुआ है। यदि यह दोनों तदन्तों को निरनिर है तदन्त का अनेक और समय तथा प्रवर्तक बनने का संबंध है।

तात्पर्य तथा 2-10 म सर्वार्थ प्रतिष्ठा है। इसके समाधान का मिसाल होता है कि तदन्त सातियों के अंत में नव। प्रतिष्ठा ग्रहण हुआ है।

इस प्रकार अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवা
<table>
<thead>
<tr>
<th>स्थान</th>
<th>विषय</th>
<th>श्रेणी</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>नाम</td>
<td>14</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>2 छात्र</td>
<td>38</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>2 छात्रां द्वारा</td>
<td>1</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>1 दिवस</td>
<td>7</td>
</tr>
<tr>
<td>पुस्तकांक</td>
<td>नाम</td>
<td>प्रतिक</td>
</tr>
<tr>
<td>----------</td>
<td>---------</td>
<td>--------</td>
</tr>
<tr>
<td>1.</td>
<td>पिता</td>
<td>59</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>माता</td>
<td>11</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>पति</td>
<td>20</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>दादा</td>
<td>36</td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>दाति</td>
<td>32</td>
</tr>
<tr>
<td>6.</td>
<td>उन्म प्रि तदय</td>
<td>32</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>कुलगण:</td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>
संहिता आयोग में सहायक विधानसभा का नेतृत्व जनसभा निकाय के अधिकृत अध्यक्ष और समिति के अध्यक्ष में पूर्व सचिव अभि प्रसाद शर्मा करता है। इस प्रकार में दिग्विजय का उल्लेख किया जा रहा है, जिसे वर्तमान स्थिति में उत्तरदाताओं की प्राप्ति के उपरान्त वैकल्पिक सिद्धांत का अलग तौर पर विचारण करना लगा। संहिता आयोग का विभाग अधिकृत नेतृत्व विभाग के अध्यक्ष के तरीके से अधेक्षित करने से प्रकाश को किया जा रहा है।
<table>
<thead>
<tr>
<th>नं.</th>
<th>निधि</th>
<th>प्राप्तक</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>अर्थांकन</td>
<td>63</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>साफ़ित</td>
<td>37</td>
</tr>
</tbody>
</table>

कुल.arch- 130 प्राप्तक
<table>
<thead>
<tr>
<th>क्र. नं.</th>
<th>विभाग</th>
<th>प्रतिशत</th>
<th>कुलप्रतिशत</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>विभाग</td>
<td>विभाग</td>
<td>60</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>उपविभाग</td>
<td>उपविभाग</td>
<td>40</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>लेखात</td>
<td>लेखात</td>
<td>78</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>उपलेखात</td>
<td>उपलेखात</td>
<td>22</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>वार्षिक</td>
<td>वार्षिक</td>
<td>2</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>500 से तक</td>
<td>500 से तक</td>
<td>5</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>1000 से 2000 तक</td>
<td>1000 से 2000 तक</td>
<td>10</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>2000 से अधिक</td>
<td>2000 से अधिक</td>
<td>83</td>
</tr>
<tr>
<td>क्र. नं.</td>
<td>केवारियक तर</td>
<td>प्रतिशत</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>--------</td>
<td>---------------</td>
<td>----------</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>1.</td>
<td>अविभाजित</td>
<td>13</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>विभाजित</td>
<td>71</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>विधा</td>
<td>8</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>विधुद</td>
<td>8</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>साधन शास्त्र</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>

कुलप्रतिशत: 100 प्रतिशत
विषय यह किसी निकलता है कि केवल केवल समय में तथाकथित विचारण नहीं है अर्थ इसके प्रत्ययता की न्युनता है। तथाकथित स्मृति अथवा इस प्रकार की हुँकार प्रकार में जब तक उठाने उनके परिवारिक परिस्थितियों में तैयार है जबकि पारंपरिक संवादित अपवाद श्लोक उपलब्ध समय में विपरीत रहता है। केवल समय में विचारित प्रकार में अंधेरा प्रकाश की अपवादों का पालन किया जाता है और वह जो पूर्ण अवलोकन कि उनमें त्रिवृत प्रकाश का निर्माण करता है। तथाकथित प्रकार में उस्तादाताओं के पारंपरिक संबंधों के विचारित है। परिवारिक संबंधों के प्रति विचारित श्लोक राखा गया, तथा जो विचारण तारंग संक्षिप्त - 28 - प्रदर्शित किया गया है, इस तारंग का उत्कर्ष करने से वह विचारित होता है कि 72 प्रतिक उस्तादाताओं की अहंकारित पारंपरिक संबंधों के प्रति हैं। 13 प्रतिक उस्तादाता अत्याधुनिक भवन में है और 18 प्रतिक उस्तादाता कुछ न कभी बालक वर्ण में है। प्रत्येक प्रौढ़ में वह बता नहीं तकता है कि यदि अत्याधुनिक वर्ण कुछ न कभी बालक वर्ण को विचारित कर दिया भावे तो ऐस्टार्न यह मुख्य उन प्रतियोगिता और जो विचारित उस्तादाताओं में आत्माकीर्ण का प्रतिष्ठान के कारण विद्वान भाव का बनाया विश्व दिखा जाता है। । प्रत्येक प्रौढ़ में वह रचना नीचे रक्षित किया जा नहीं तकता है कि विचार नकार के एक परिवारों में आत्माकीर्ण तथ्यात्मक साधनों का प्रभाव अवश्यकता से है। तारंग संक्षिप्त - 29 - उस्तादाताओं के परिवारों में प्रदर्शित भावना प्रति का विचारण प्रस्तुत।
<table>
<thead>
<tr>
<th>नं.</th>
<th>वैशिष्ट्यिक स्थिति</th>
<th>प्रतिलक्ष</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1</td>
<td>अद्वितीय</td>
<td>16</td>
</tr>
<tr>
<td>2</td>
<td>विभाजित</td>
<td>53</td>
</tr>
<tr>
<td>3</td>
<td>विभाजित</td>
<td>17</td>
</tr>
<tr>
<td>4</td>
<td>विधवा</td>
<td>12</td>
</tr>
<tr>
<td>5</td>
<td>वायव्याया</td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>

**पूर्वोक्तम:** 11 प्रतिलक्ष
<table>
<thead>
<tr>
<th>क्र. नं.</th>
<th>तथ्यांचे नाव</th>
<th>प्रतिकल</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1</td>
<td>सहात्म्य</td>
<td>72</td>
</tr>
<tr>
<td>2</td>
<td>सहायत्य</td>
<td>15</td>
</tr>
<tr>
<td>3</td>
<td>कुठ नर्म भर गेले</td>
<td>18</td>
</tr>
</tbody>
</table>

कुलसंख्या: 14 प्रतिकल
उत्तरदाताओं के परिवारों में भोजन रूपसा का प्रबंधन

<table>
<thead>
<tr>
<th>नं.</th>
<th>भोजन स्वस्थ</th>
<th>प्रबंधक</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>गाँवाहारी</td>
<td>103</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>छोटाहारी</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>विलित</td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>

कुलयोग :- 103 प्रबंधक
कथा ज्ञान है। तत्त्वादिक में क्षण गुप्तनाथ स्वतंत्रताः है। जिस उदयमाता साधारण बाल नहीं है। तत्त्वादिक इसके अनुसार है। २३ तत्त्वादिक में व्याख्यात्मक और स्वतंत्रतात्मक टिप्पणी करने वाले सर्वत्र हर तथ्य मानना नहीं है। तत्त्वादिक संख्या ३२ में उत्तरदाताओं को पारिवारिक स्वयंसेवा सर्वत्र हर तथ्य करने वाले हैं। यदि कहते हैं उत्तरदाता को तत्त्वादिक अवश्य प्रकट करता है कि वह समस्त सर्वत्र पारिवारिक स्वयंसेवा की गुणनायक प्रकट नहीं। तत्त्वादिक गुणित वह विषय तत्त्वादिक संख्या ३१ में प्रकट करता है। इस तत्त्वादिक का अनुसार करने वाले सर्वत्र हर तथ्य कहते हैं कि ६३ प्रक्रिया उत्तरदाताओं के पास निहित अवगतत्व गुणित है और ३२ प्रक्रिया उत्तरदाता निर्देशन में आने का रहित है। वह सब सब तत्त्वादिक संख्या ३२ प्रक्रिया स्वयंसेवा सर्वत्र हर तथ्य करते हैं। तत्त्वादिक प्रक्रिया में शामिल अंशत्व धर्म है। किन्तु किसी उत्तरदाता के अभिव्यक्ति में किसी अन्य नामानुसार प्रक्रिया नहीं। कि उनके पारिवारिक स्वच्छता विषय प्रकट के बारे का सर्वत्र पारिवारिक स्वाभाविक प्रबन्ध करते हैं। इस तौर पर की गुणनात्मक संख्या ३३ प्रक्रिया स्वयंसेवा नहीं है। कौन से तत्त्वादिक के अनुसार जो गुणना प्रकट है उसका अज्ञात प्रकार के है। ३० प्रक्रिया २३ और २० प्रक्रिया २० प्रक्रिया, इसी रूप से २० प्रक्रिया विषय है। इस तौर पर कहते हैं कि वह सभी नियम में नियम नहीं करने वाले अन्य तत्त्वादिक सर्वत्र नियम प्रकट के बारे का प्रबन्ध है।

तत्त्वादिक स्वतंत्रता में पुरुष नर प्रत्यय मोहनता होता है। और तत्त्वादिक सर्वत्र गुणनात्मक विषय है। वह तत्त्वादिक स्वतंत्रता शास्त्रीय प्रक्रियाएं स्वतंत्र है। इसीलिए गुणनात्मक संख्या ३४ प्रकट की गयी है। तत्त्वादिक का अनुसार करने वाले सर्वत्र हर तथ्य है। यह प्रतिवेदन उत्तरदाताओं से नमूना है। जो प्रतिवेदन प्रक्रियाएं को स्वतंत्रता है। जो कि तत्त्वादिक स्वतंत्रता शास्त्रीय प्रकट है। तत्त्वादिक स्वतंत्रता का अनुसार मान तत्त्वादिक
<table>
<thead>
<tr>
<th>संख्या</th>
<th>पारिवारिक सदस्यों की प्रतिशत अभिलधियाँ</th>
<th>प्रतिशत</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>विधा</td>
<td>14</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>राजनाथ</td>
<td>63</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>धारित</td>
<td>13</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>सामाजिक</td>
<td>8</td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>रिसिडेंट</td>
<td>2</td>
</tr>
<tr>
<td>6.</td>
<td>अन्य सात</td>
<td>_____</td>
</tr>
</tbody>
</table>

कुलप्रतिशत: 150 प्रतिशत
<table>
<thead>
<tr>
<th>क्रम सं.</th>
<th>हावा अवल</th>
<th>मूलिका</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>समझा अवल</td>
<td>6</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>समझा अवल</td>
<td>92</td>
</tr>
</tbody>
</table>

कुलयोग :- 158 प्रतिवाद
<table>
<thead>
<tr>
<th>नं.</th>
<th>नाम</th>
<th>प्रतिलिपि</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>नृती</td>
<td>3.0</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>रेशम</td>
<td>2.0</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>रेशकांत</td>
<td>2.0</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>भिक्षा</td>
<td>3.0</td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>मन्य कोई</td>
<td>---</td>
</tr>
</tbody>
</table>
ही वेदि है । इस प्रत्येक में प्राण का मूल्यांकन पुनः किया गया और शेष प्रणा के प्राप्ति तत्वों के लिए पालिका तत्काल 35 में प्रदर्शित किया गया । पालिका में प्रदर्शित तत्वों के अधार पर यह कहा जा सकता है कि 82 प्रतिलक्ष उत्तरदाताओं ने उन नामों का अवलोकन किया है । 16 प्रतिलक्ष उत्तरदाताओं ने नारात को हृदिकोण अथवा किया और उनके तत्काल 2 प्रतिलक्ष उत्तरदाता ने प्राप्ति हृदिकोण को निर्देशित किया जिन्होंने स्थिर पाना के प्रति अपना हृदिकोण अथवा करने में आत्मक प्रकृति की । प्रत्येक प्राणा में प्राणा संधाएँ के अधार पर यह किसी निश्चित है कि अस्तुति समाप्त है । तत्त्व यदि आप बाल धार्मिक तत्वों के अन्तर्गत यह राष्ट्र दान के सा में दर्जा यह करता है तो यह कहा जा सकता है कि अत्यधिक हृदिकोण अथवा की जाता है । इस प्रत्येक प्राणा का समाधान निर्धारित होने के अन्तर्गत होता रहता है और जब सिद्धि तारा तालिका संख्या 36 में प्रदर्शित किया गया है । इस तालिका का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि 62 प्रतिलक्ष उत्तरदाता बौद्ध के अन्तर्गत । 3 प्रतिलक्ष उत्तरदाता ने के राजा और 33 प्रतिलक्ष उत्तरदाता भित्तिक प्रृथ्विक दारा पैदावृत्तिक प्रृथ्विक की निर्देशित किया है । इस तरह हमें उल्लेख किया जा सकता है इस ग्रंथ के अवलोकन निर्देशित करने आगे उत्तरदाता कंप्लेक्स अधिक समृद्धि तत्त्वों के प्राप्ति के पालन का एकाक्षरित रूप से आकार के अतिरिक्त है और इस प्रतिलक्ष के प्राप्ति सेतुओं का निर्माण तालिका संख्या 37 में दिया गया है । इस प्राणा में उल्लेख किया जा सकता है कि । प्रतिलक्ष उत्तरदाताओं के अलंकार गोपा प्रणाली - देवता के नाम के अधार पर है । इस तरह साधन हृदिकोण के लिए 9 प्रतिलक्ष उत्तरदाताओं ने बहुतदार्थ प्रृथ्विक संधाएँ पर श्रेष्ठ प्रणाली की स्वीकृति दी है । बहुत संख्या तालिका की समृद्धि उत्तरदाताओं का अन्त यह है कि अन्य श्रेष्ठ के मान्य रूप में स्पष्ट और प्राणा का प्रणाली सेवन है । तालिका सेतु 38 में पश्चात प्रणाली विविध अथवा अन्य तालिका का अवलोकन करने से स्पष्ट
<table>
<thead>
<tr>
<th>क्रम संब.</th>
<th>नाम</th>
<th>पुस्तिका</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>वे</td>
<td>32</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>नहीं</td>
<td>16</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>कुछ नहीं</td>
<td>2</td>
</tr>
</tbody>
</table>

कुलयोग := 1.0 पृष्ठांक
<table>
<thead>
<tr>
<th>क्रम नं.</th>
<th>मामूल</th>
<th>प्रतिलिपि</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>गोप के उपनाम</td>
<td>62</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>गोप के उपनाम</td>
<td>3</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>विशिष्ट पुस्तिका</td>
<td>30</td>
</tr>
</tbody>
</table>

कुल प्रतिलिपि: 100
उत्तरदाताओं के अधिकार गोष्पण के आधारों का विवरण

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्रम सं.</th>
<th>गोष्पण का आधार</th>
<th>पुर्तिच्छत</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>दैवी-देशाताओं के नाम पर</td>
<td>9</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>आधारित</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>वस्त्रभार/प्राकृतिक संपत्ति पर आधारित</td>
<td>9</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>अन्य कोई गोष्पण</td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>

कुलमात्रा: 9

पुर्तिच्छत:
### तालिका संख्या - 1334

अतरदाताओं के मात्रानुसार पद्म गुणा का विवरण

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्रम अनु�ार</th>
<th>पद्म गुणा</th>
<th>प्रतिहार</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>ठी</td>
<td>51</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>नहीं</td>
<td>61</td>
</tr>
</tbody>
</table>

कुलयोग :- 112 प्रतिहार
कौशल के कि वर्ग पूर्ण के का परि रिकास में तात्पर्य अनुसार गुण विवरण । तात्पर्य मान्यता पुर्ण में यह कहा जा सकता है कि आधुनिक तात्पर्य शरीर में प्रभाव के कारण कि नीचे तक प्रभाव बढ़ जाता है। परंतु रंगाचार के के अनेकों के अवसरों के उत्पादकता के पुर्ण में विश्लेष का उपलब्धि तात्पर्य तीव्रता 39 वे उद्धृत किया गया है। इसलिए वह वरिष्ठ तीव्रता के पुर्ण में विश्लेष का उपलब्धि तात्पर्य तीव्रता 39 वे उद्धृत किया गया है। यह पुनः निरीक्षित करता है कि कारण के अधिकारी के आधारपत्रों में आधुनिक तात्पर्य शरीर के कारण परिवर्तित आता है। तत्पर्य अनुकूलित विनेक्षण का वर्ग और इस तात्पर्य का समावेश करने के साथ होता है कि यह पुर्ण के अधिकारी का उद्धृत अधिकारिता शरीर में विश्लेष तीतरी परिवर्तित नहीं होता है। 59 पुर्ण के अधिकारी ने वरिष्ठ नियोजन प्राधिकृति की तीव्रता दिया है। और यह पुर्ण के अधिकारी ने अधिकार प्रथा नहीं करता है। 59 पुर्ण के अधिकारी ने परिवर्तित नियोजन प्राधिकृति की तीव्रता दिया है। और यह पुर्ण के अधिकार प्रथा नहीं करता है। 59 पुर्ण के अधिकार का प्रथा को संस्थापित नहीं तीव्रता दिया है। 73 पुर्ण के अधिकारी ने संस्थापित दिया है। और यह प्रथा नहीं करता है। 12 पुर्ण के अधिकारी ने विश्लेष का संस्थापित अधिकार का प्रथा को संस्थापित नहीं तीव्रता दिया है। 12 पुर्ण के अधिकार का प्रथा को संस्थापित नहीं तीव्रता दिया है। 12 पुर्ण के अधिकार का प्रथा को संस्थापित नहीं तीव्रता दिया है। 73 पुर्ण के अधिकार का प्रथा को संस्थापित नहीं तीव्रता दिया है।
<table>
<thead>
<tr>
<th>क्रम सं.</th>
<th>मात्र</th>
<th>प्रतिबाल</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td></td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>1.</td>
<td>तत्काल</td>
<td>13</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>अलंकार</td>
<td>7</td>
</tr>
</tbody>
</table>

कुलयोग:-
13 प्रतिबाल
<table>
<thead>
<tr>
<th>नंबर</th>
<th>अभिव्यक्ति</th>
<th>नाम</th>
<th>नहीं</th>
<th>हथयोग प्रतिक्रिया</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>विवाह एक सामाजिक वैध है</td>
<td>100</td>
<td>---</td>
<td>100</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>विवाह एक धार्मिक संकार है</td>
<td>100</td>
<td>---</td>
<td>100</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>अध्यात्मिक जीवन में विवाह के कोई कठिनाई नहीं होती</td>
<td>95</td>
<td>5</td>
<td>100</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>परिवार नियोजन के पूर्व भी सबिंत</td>
<td>54</td>
<td>46</td>
<td>100</td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>वेता बलात्कास के लिये एक पूरा आँखबंध है</td>
<td>100</td>
<td>---</td>
<td>100</td>
</tr>
<tr>
<td>6.</td>
<td>अन्य परिवार विलाय उपयोगी है</td>
<td>73</td>
<td>27</td>
<td>100</td>
</tr>
<tr>
<td>7.</td>
<td>विवाह के समय अनेक आदि समय का प्रकाश उद्धृत है</td>
<td>12</td>
<td>33</td>
<td>100</td>
</tr>
</tbody>
</table>
सनातन अध्यात्मिक प्रृणाली में अर्थात रिटार्न आ और 
हलका सीमित श्रद्धा कौशल श्रद्धा का तत्त्व है। तलित यह अर्थात होना कि 
विधाये के तुम के यथा विश्लेषण है प्रवाह का योग योगना के सामने लक्षित दिया 
जाता। तलित वर्तमान अध्यात्म की समृद्ध उप सूत्रों को तनन शास्त्रीय पृष्ठ एवं 
परमेत्र के अर्थज्ञता है। तात्त्विक अवधारणा का शीर्ष किन्दु एवं अंग्रेज तीक्ष्ण 
तिर दारिद्र्य के अस्तित्व वाली आथरिया के अनुसार धार्मिक विधाय अर्थों शास्त्र िज 
अयोग्य के कितै सुरक्षित प्रवाह वाला परिषद जो विशेष गोरे प्रवाश 
अस्तित्व अर्थों के अनुसार भाव है। इतने अथरिया उपजन के प्रवाश में वो सुविधाएं 
प्राप्त कर सके वक नवाजी विधाय के सामने सर्वांशिक का से उत्पादन है। अथरिया 
विधाय के अन्य तनन में सांस्कृतिक अभ्यास के अनुसार धार्मिक विधाय 
धाराओं का ग्राहन 
के मिली रूपमें परीक्षण शिक के अथरिया में उत्पादनात्मक है। इत्यं 
प्रवाह में अथरिया अन्यवीम्कन का सम्बन्ध प्राप्त हुआ है वह अथरिया वर्तमान 
तनन वेश्यों के लिए पूर्ववर्ती वनह है। वर्तमान अध्यात्म के प्रवाश में अथरिया। परिषद 
विवाह उप तथा उधर अन्य तनन भागीय पृष्ठों में सांस्कृतिक एवं अथरिया 
को सही कर के प्रवाह हुए उलझे वर्तमान शीर्ष पृष्ठ की अस्तित्वता गो दृष्टिकृत रखने के 
अवस्था इस से तब्की दिशा करता यह। वह तिमी था कि यह तात्त्विक हो लाह अथरिया 
अथरिया के सामने एक संख्या विश्लेषण के तीन अथरिया शीर्ष के लिए 
को प्रवाह का प्रवाह का संख्या संख्या का अर्थ 
अथरिया अथरिया के प्रवाह के अथरिया शीर्ष के लिए 
अथरिया अथरिया के प्रवाह के अथरिया शीर्ष के लिए 
अथरिया अथरिया के प्रवाह के अथरिया शीर्ष के लिए 
अथरिया अथरिया के प्रवाह के अथरिया शीर्ष के लिए 
अथरिया अथरिया के प्रवाह के अथरिया शीर्ष के लिए 
अथरिया अथरिया के प्रवाह के अथरिया शीर्ष के लिए 
अथरिया अथरिया के प्रवाह के अथरिया शीर्ष के लिए 
अथरिया अथरिया के प्रवाह के अथरिया शीर्ष के लिए 
अथरिया अथरिया के प्रवाह के अथरिया शीर्ष के लिए
तामालिक पद्धत देन मूलम बोले थे कि यहाँ कालों के संयोजन के यदि एक उपधर्म विभेद के माध्यम पर संयोजन नहीं किया जाता तो हमे तामालिक बाता के के और जो पूर्णतः तामालिक अध्यायण के अन्तर्गत था, तात्पर्य, विभेद के अनावश्यक प्रश्नों के निश्चय है विकास के तत्त्व अन्तर्दृष्टि का बल नए तत्त्व अन्तर्दृष्टि नहीं है। तात्पर्य, विद्वान विवेकानन्द की वैज्ञानिकता में उपहार कहीं। एक स्तर पर इसका अहंकार वैज्ञानिक है इतनी विद्वान अन्तर्दृष्टि की तम्बूड़े उपरिवर्तितों को भूला में अपना करते हुए यह उपेक्षा की गई जो कि तामालिक विद्वानारों के क्षेत्र में वाल प्रतिवर्त रहा जो यह अवधारणा स्वयं के न राम को नहीं।